is question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

No. of Question Paper : 8579 GC-4

ique Paper Code : 62051202

me of the Paper : MIL, Hindi Bhasha Aur Sahitya-A

me of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi A**

mester : II

य : 3 घंटे पूर्णांक : 75

त्रों के लिए निर्देश

इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

सप्रंग व्याख्या कीजिए:

(क) करता था तौ क्यूं रह्या, अब करि क्यूं पछताइ।। (10×3=30)

बोवै पेड़ वबूल का, अंब कहाँ तैं खाइ।।

जांनि बूझि साचहिं तजैं, करैं झूठ सूँ नेह।

ताकी संगति राम जी, सुपिनैं ही जिनि देहु।।

अथवा

P.T.O.

हरि म्हारा जीवण प्राण अधार।। टेक।।

और आसिरा णा म्हारा थें विण, तीनूं लोक मँझार।

थें विण म्हाणे जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार।

मीरा रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक णिहार।।

(ख) वे न इहाँ नागर, बढ़ी जिन आदर तो आब।

फूल्यौ अनफूल्यौ भयौ, गवँई-गाँव, गुलाब।।

नीच हियैं हुलसे रहैं गहे गेंद के पोत।

ज्यौं ज्यौं माथैं मारियत, त्यौं-त्यौं ऊँचे होत।

अथवा

हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै।

नीर सनेही कों लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै।

प्रीति की रीति सु क्यौं समझैं जड़ मीत के पानि परे को प्रमानै।

या मन की जु दसा घनआनँद जीवन की जीवनि जान ही जानै।।

(ग) सब लोग हिल मिलकर चलो, पारस्परित ईर्ष्या तजो,

भारत न दुर्दिन देखता, मचता महाभारत न जो,

79

हो स्वप्नतुल्य सदैव को सब शैर्य्य सहसा खो गया,

हा! हा! इसी समराग्नि में सर्वस्व स्वाहा हो गया।।

अथवा

तू तरुण देश से पूछ अरे,

गूँजा कैसा यह ध्वंस-राग?

अम्बुधि-अन्तस्तल-बीच छिपी,

यह सुलग रही है कौन आग?

प्राची के प्रागंण-बीच देख,

जल रहा स्वर्णयुग-अग्निज्वाल,

तू सिंहनाद कर जाग तपी!

मेरे नगपति! मेरे विशाल।

किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए: (10)

(क) कबीर;

(ख) मीराँ

3. बिहारी के पदों पर प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

घनानन्द की प्रेम-व्यंजना के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

4. नागार्जुन की कविता 'बादल को घिरते देखा है' के काव्य सौन्दर्य प
कीजिए।

अथवा

प्रसाद की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए: (5

(i) हिंदी भाषा का विकास;

(ii) खड़ी बोली;

(iii) आदिकाल का नामकरण;

(iv) राम काव्य;

(v) छायावादी कविता;

(vi) रीति बद्ध काव्य।